

कामधेनु अर्क



औ-नधि गुण

सुश्रुत संहिता, चरक संहिता, भावप्रकाश, रानिघुंट, अमृतसागर, आरोग्य ज्ञानको-न, द्रव्यगुण शास्त्र, हिंदुस्तान का वैद्यराज, बृहद वाग्भट्ट, अ-टांग संग्रह आर्यभिकेक आदि आयुर्वेद ग्रंथों में गोमूत्र के औ-नधिय गुणों के बारे में वर्णन है.



विश्व को भारत ने कामधेनु चिकित्सा पद्धति दी है. ऋणियों ने अपना जीवन कामधेनु चिकित्सा पद्धति से निरोगी तथा दीर्घायु रखा है.



विश्व भारत के ऋणियों के दिव्य एवं अलौकिक जीवन शैली से चकित होकर कामधेनु चिकित्सा पद्धति की ओर आकर्णित हुआ है.



विश्व ने कामधेनु चिकित्सा पद्धति को हर तरह से परखा तथा विश्व आज भारत की दी गयी चिकित्सा पद्धति को अब पूरी तरह से अपना चुका है.

कामधेनु गोलोक से

कामधेनु यानी मानव की हर मनोकामना की पूर्ति करने वाली धेनु. कामधेनु गोलोक से मानव का कल्याण करने के लिए मृत्युलोक में आयी है.

कामधेनु दूध, मूत्र तथा गोमय देती है. मूत्र तथा गोमय जीवन भर देती है. दूध की तुलना में मूत्र अधिक प्रभावशाली है.

किसी भी जीव का मूत्र नहीं पीया जाता है. गोमूत्र ही गंगाजल के समान पवित्र होने के कारण पीया जाता है. गोमूत्र एक बार महीन वस्त्र से छानने से एक बार पेट

साफ होता है. अधिक बार छानने से उसके गुण में वृद्धि होने के कारण ही पेट साफ सही ढंग से होता है.

कलियुग में मानव की सहन करने की शक्ति समाप्त हो गयी है इसलिए मानव के द्वारा अमृत के समान गोमूत्र पीना आसानी से संभव नहीं है.

विचित्र स्वाद

गोमूत्र तीखा, तेज, खारा, कड़वा, कसैला, उ-ग है. गोमूत्र पीना अमोनिया की तेज गंध एवं कैसेले स्वाद के कारण आम आदमी के लिए बहुत ही दुखदायी है.

गोमूत्र ताजा पीना चाहिए लेकिन महानगर में रहने वाले व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है.

अंतिम उपाय

वर्तमान में कलियुग में हर समस्या का कामधेनु अर्क ही अंतिम उपाय है. कामधेनु अर्क सही ढंग से तैयार करने पर अमोनिया की तीव्र गंध कम हो जाती है. गोमूत्र का रंग पारदर्शी हो जाता है इसलिए अर्क पीने में किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होती है.

अर्क रक्त में मिलकर रक्त की गति को बढ़ाता है. अर्क के अंदर मौजूद रसायन रक्त में मिलकर रक्त को साफ तथा रक्त के लाल कणों में वृद्धि करते हैं.

अर्क के नियमित सेवन करने पर रोग प्रतिरोधक क्षमता असाधारण रूप से विकसित हो जाती है.

साइड इफेक्ट नहीं

गोमूत्र अर्क में साइड इफेक्ट नहीं है इसलिए पूरी तरह से सुरक्षित है. गोमूत्र अर्क पूरी तरह से सात्विक, पौष्टिक एवं सुपाच्य है.

स्वरोजगार

गोमूत्र का उपयोग वर्तमान में गो कोला, जड़ीबूटियों के साथ में अलग अलग अर्क, आसव, नारी संजीवनी, बाल पाल रस, प्रमेहारी, नहाने, मालिश करने, एनिमा, पंचगव्य पीने तथा स्नान करने के लिए, आयुर्वेद में शोधन करने के लिए, पंचगव्य एवं महापंचगव्य घी, प्रमेहारी, फिनाइल, फसलरक्षक, घनवटी, गोवंश के उपचार में, बालों के शेंपू जैसी अनेक वस्तुएं बनाने में किया जा रहा है.

रोग के अनुसार

कामधेनु अर्क रोग के अनुसार तैयार करने पर युवाओं को स्वरोजगार देगा.

प्रथम स्तर

1000 लीटर

कामधेनु अर्क का सबसे अधिक उपयोग वर्तमान में भारत में गांव गांव में नारी संजीवनी, बालपालरस, प्रमेहारी के लिए किया जाता है.

80,000

अर्जुन, तुलसी, नीम, पुनरनवा, आंवला, अमृता जैसे 80,000 प्रकार के अर्क उपचार की आवश्यकता को ध्यान में रखकर तैयार किये जा सकते हैं.

कामधेनु अर्क तैयार करने के लिए आधुनिक सुविधाओं के साथ में अनुसंधान केंद्र की आवश्यकता है.

कामधेनु अर्क विश्व में बहुत अच्छे मूल्य पर निर्यात करने के लिए बहुत ही सावधानी रखनी आवश्यक है.

सावधानी

देशी काली बछिया मिलनी आसान नहीं है. देशी काली बछिया में विशेष-उर्जा होती है इसलिए प्राथमिकता काली बछिया को ही देनी चाहिए. काली बछिया का मूत्र बहुत ही कम मात्रा में एकत्रित करना संभव है.

अमरकंटक

मध्यप्रदेश में अमरकंटक में विश्व की सबसे अधिक जड़ीबूटियां हैं. अमरकंटक अमर होने का स्थान है. अमरकंटक के बाद में उत्तरांचल में सबसे अधिक जड़ीबूटियां हैं.

जड़ीबूटियां खाने वाली गायों का मूत्र का रंग गाढ़ा बैंगनी रंग का होता है. देखने में काला दिखाई देता है.

वेचूर

वर्तमान में वैचूर का मूत्र अर्क तैयार करने के लिए सर्वश्रेष्ठ है. केरल की तेजी से लुप्त हो रही प्रजाति वेचूर विश्व की सबसे छोटी है. वैचूर की रोग प्रतिरोधक क्षमता अदभुत है इसलिए बहुत ही कम बीमार होती है.

कामधेनु अर्क तैयार करने के पूर्व बहुत सारी सावधानियां रखनी है. स्वस्थ गोवंश जैविक आहार एवं जल ग्रहण करने वाला हो तथा गोमूत्र ताजा तथा सफाई के साथ में एकत्र करना है.

वर्तमान में विश्व में 100 प्रतिशत जैविक कामधेनु अर्क बहुत अधिक लोकप्रिय है.

प्रथम स्तर पर युवा के द्वारा अपने निवास पर नमूने के रूप में प्रयोग करने के लिए देने के लिए बहुत ही कम लागत लगाकर कम से कम प्रतिमाह 100 लीटर तथा अधिकतम 1000 लीटर तैयार किया जा सकता है.

द्वितीय स्तर

छोटी गोशालाओं में कम से कम प्रतिमाह 1000 लीटर तथा अधिकतम 10,000 लीटर अर्क तैयार करना है.

तृतीय स्तर

मध्यम गोशालाओं में प्रतिमाह कम से कम 10,000 लीटर तथा अधिकतम 50,000 लीटर तक अर्क तैयार करना है.

चतुर्थ स्तर

बड़ी गोशालाओं में प्रतिमाह कम से कम 50,000 लीटर तथा अधिकतम एक लाख लीटर अर्क तैयार करना चाहिए.

पंचम स्तर

महानगरों में निर्यात करने के लिए कम से कम प्रतिमाह 1 लाख लीटर तथा अधिकतम 10 लाख लीटर अर्क तैयार करना चाहिए.

एडस

एड्स यानी एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिसीयेन्सी सिन्ड्रोम के प्रथम अक्षरों से मिलकर बना है यानी एच. आई. वी. पाजिटिव. एक्वायर्ड अर्थात ऐसी बीमारी जो पैतृक रूप से नहीं अपितु वि-गणु संक्रमण से उत्पन्न हुई हो. इम्यून डिफिसिएन्सी का तात्पर्य रोग प्रतिरोधक क्षमता का कम हो जाने से है.

सिंड्रोम

सिंड्रोम का तात्पर्य बीमारी को प्रकट करने वाले कई लक्षणों के समूह से है. एडस किसी एक रोग का नाम नहीं है अपितु एडस विभिन्न प्रकार के संक्रमणों का समूह है.

ढाई गुना

गोमूत्र में खनिज की मात्रा दूध की तुलना में ढाई गुना है.

दूध में खनिज की मात्रा मात्र 0.75 प्रतिशत है जबकि गोमूत्र में खनिज की मात्रा 2.1 प्रतिशत है.

हमारे शरीर में पोटेशियम बहुत ही महत्वपूर्ण खनिज है. एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 250 ग्राम पोटेशियम मौजूद रहता है. जितना पोटेशियम हमें दैनिक आहार में मिलता है लगभग उतना पोटेशियम मलमूत्र के माध्यम से बाहर निकलता है.

आवश्यकता पड़ने पर गुर्दे पोटेशियम की थोड़ी मात्रा भी मूत्र के साथ उत्सर्जित कर देते हैं. पोटेशियम धन आयन के रूप में मौजूद रहता है. पोटेशियम कोशिकाओं में पाया जाता है. पोटेशियम प्रमुख अन्तःकोशिकीय धनायन है और सक्रिय कोशिकीय संरचना इसकी आंतरिक और बाह्य कोशिकीय सांद्रता को स्थिर बनाये रखती है. शरीर में पोटेशियम का प्रमुख कार्य कोशिकाओं के आयतन तथा उनके रसाक-रण दाब को स्थिर बनाये रखता है. पोटेशियम शरीर अम्लीय-क्षारीय संतुलन को प्रभावित करता है. साथ ही अनेक उपापचयी प्रक्रियाओं में योग देता है. अंतः तथा बाह्य कोशिकीय पोटेशियम आयनों का पारम्परिक अनुपात ही उत्तेजनीय उतकों के झिल्ली-विभव को निर्धारित करता है. कुछ बीमारियों में पोटेशियम के भंडार में कमी आ जाती है. अतिसार और वमन शरीर में सोडियम की कमी एवं जलाभाव के साथ पोटेशियम अभाव की स्थिति उत्पन्न होती है. अभिवृक्क प्रतिरक्षा पसीने के स्त्राव में हुई वृद्धि भी पोटेशियम अभाव पैदा कर सकती है क्योंकि ये हार्मोन गुर्दों के पोटेशियम स्त्राव दर में वृद्धि करते हैं. उतकों के न-ट होने के कारण भी शरीर को पोटेशियम के अभाव का सामना कर पड़ सकता है. पोटेशियम मांसपेशियों को काम करने में सहायता करता है. पोटेशियम की कमी से आंतों की पेशियों में विकार उत्पन्न हो सकता है. जब किसी वजह से शरीर का कोई उतक न-ट हो जाता है तो उस उतक की कोशिकाओं का पोटेशियम मूत्र के साथ उत्सर्जित होने लगता है. एक ग्राम कोशिकीय प्रोटीन के न-ट होने पर लगभग 3 मिलीग्राम पोटेशियम मुक्त होता है. रक्त में मौजूद हाइड्रोजन आयनों की सांद्रता में कमी तथा गुर्दजन्य

सोडियम आयनों की कमी भी पोटेसियम अभाव पैदा कर सकती है. ऐसा भी हो सकता है कि शरीर में मौजूद कुल पोटेसियम की मात्रा में कमी न आये पर शरीर में पोटेसियम अभाव के लक्षण स्प-ट होने लगे. यह सब उस समय होने लगता है जब बाह्य कोशिकीय प्रभाग का पोटेसियम आंतरिक कोशिकीय प्रभाग में सीनातरिक होने लगता है. जब शरीर में पोटेसियम का अभाव होता है तो यह जरूरी नहीं है कि उसका प्रभाव रक्तप्लाज्मा के पोटेसियम स्तर पर भी पड़े. दरअसल रक्तप्लाज्मा तथा कोशिकीय पोटेसियम के बीच काफी जटिल संतुलन रहता है जो अनेक कारणों से प्रभावित हो सकता है. इनमें से एक प्रमुख कारण है रक्त के अम्लीय-क्षारीय संतुलन में गड़बड़ी. अम्ल-रक्तता पोटेसियम को कोशिकाओं से बाहर निकालती है पर खार रक्तता बाह्य कोशिकीय पोटेसियम को अन्तः कोशिकीय प्रभाग में भेजती है. अत्यधिक पोटेसियम अभाव हो जाने पर शरीर के अन्तः व बाह्य कोशिकीय दोनों ही प्रभागों में पोटेसियम की सांद्रता कम हो जाती है. यद्यपि किसी भी प्रभाग में हुए पोटेसियम हास के कारण शरीर में पोटेसियम अभाव के लक्षण दिखाई देने लगते हैं किंतु दोनों ही प्रभाग में एक साथ होने वाली पोटेसियम अभाव की स्थिति से संबंधित लक्षण शीघ्रता से प्रकट होने लगते हैं. पोटेसियम अभाव से पीड़ित व्यक्ति संभ्रांति का शिकार हो जाता है. वह उदासीनता एवं घबराहट का शिकार होकर मूर्च्छा की स्थिति में भी पहुंच सकता है परन्तु उपचार के बाद स्वस्थ होने पर रोगी को यह सब कुछ याद नहीं रहता. पोटेसियम के अभाव से पेशियों में कमजोरी आ जाती है. कंकाल पेशियों पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है. आमाशय की पेशियों में आई कमजोरी के कारण छोटी आंत में अवरोध की स्थिति पैदा हो सकती है. हृदय पेशी में उत्पन्न दुर्बलता, हृदय को विस्तारित करती है और फलस्वरूप रक्तचाप गिरने लगता है. ऐसी स्थिति के लंबे समय तक बने रहने पर हृदय अपना काम करना बंद भी कर सकता है. श्वसन पेशियों में आई कमजोरी के कारण श्वसन केंद्र नि-क्रिय हो सकता है और फलस्वरूप व्यक्ति मौत का शिकार बन सकता है. पोटेसियम अभाव की स्थिति में गुर्दे मूत्र में पोटेसियम की सांद्रता बढ़ाने या घटाने में अक्षम हो जाते हैं. मूत्रतारोधी

के हार्मोन भी गुर्दों की क्रियाशीलता को प्रभावित नहीं करते हैं. पोटेसियम अभाव से पीड़ित व्यक्ति को बार बार मूत्र त्यागना पड़ता है. अत्यधिक मूत्र निकलने के कारण शरीर में जलाभाव की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है और पीड़ित व्यक्ति को बार बार प्यास लगने लगती है. पोटेसियम अभाव से ग्रस्त व्यक्ति के शरीर में हाइड्रोजन आयन के अभाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है. पोटेसियम आधिक्य की स्थिति जिसमें पोटेसियम आयनों की अधिकता होती है शरीर के लिये घातक है. जब शरीर अपनी आवश्यकता से अधिक पोटेसियम को बाहर निकाल नहीं पाता है तब शरीर में पोटेसियम की मात्रा बढ़ने लगती है. पोटेसियम आधिक्य गुर्दों के विकार उत्पन्न हो जाने के कारण तथा रक्त में पोटेसियम की मात्रा एकाएक अधिक मात्रा पहुंचने के कारण होता है. कभी कभी कोशिकीय पोटेसियम के अचानक मुक्त होने के कारण पोटेसियम आधिक्य की स्थिति उत्पन्न होती है. पोटेसियम आधिक्य से हृदयपेशी पर अवर्तमान प्रभाव पड़ता है. फलस्वरूप हृदय धड़कने की दर कम और असामान्य हो जाती है. सीरम में पोटेसियम की सांद्रता प्रतिलीटर में सात मिलीलीटर अधिक हो जाती है तो हृदय गत्यावरोध हो जाता है. रक्त में पोटेसियम की सांद्रता को ज्वाला ज्योतिर्मापी की सहायता से आसानी से मापी जाती है. मनु-य के रक्त में सामान्यतः 3.5 से 5.5 मिली मोल पोटेसियम प्रतिलीटर होता है. पोटेसियम के आधिक्य अथवा अभाव की जानकारी इ.सी.जी. में हुए परिवर्तन से भी प्राप्त की जा सकी है. मुंह से कुछ ऐसे पदार्थ दिये जाते हैं जो आमाशय तथा छोटी आंत में पहुंचकर पोटेसियम का अधिशो-ण कर सकें. ग्लूकोज तथा इंसुलिन भी पोटेसियम आधिक्य को कम करने में सक्षम हैं. ये पोटेसियम को बाह्य कोशिकीय प्रभाग से अतःकोशिकीय प्रभाग में जाने के लिये प्रेरित करते हैं. पोटेसियम की कमी के कारण अपच, मंदाग्नि, कब्ज, वायु विकार उत्पन्न होते हैं. पोटेसियम शरीर के प्राकृतिक विकास के लिये बहुत ही अधिक आवश्यक है क्योंकि पोटेसियम के कारण पाचन बहुत ही सही ढंग से होता है और भूख बहुत ही तेज लगती है. गर्भ में पल रहे बच्चे को संपूर्ण विकास के लिये पोटेसियम की आवश्यकता 5 माह के बाद पड़ती है इसलिये गर्भवती महिला को गाय

माता के दूध एवं छाछ का सेवन प्रतिदिन अवश्य करना चाहिये. एक व्यक्ति को 140 मिलीग्राम पोटेशियम की आवश्यकता होती है.

सोडियम

सोडियम मानव शरीर के लिये अनिवार्य है. सोडियम मानव जीवन के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. सोडियम के कारण रक्त पूरी तरह से साफ रहता है. सोडियम के कारण शरीर में नाडी विकार नहीं होता है.

सोडियम भोजन को पचाने में सहायक होता है. शरीर में अन्य खनिजों को शरीरोपयोगी बनाने तथा उनका सात्त्य करने के लिये सोडियम बहुत महत्वपूर्ण है. सोडियम के कारण पसीने में खनिज पाया जाता है.

मूत्र में पाये जाने वाले 17 प्रकार के खनिजों के अलावा रुबीडियम, टिटैनियम, लिथियम, स्ट्रॉशियम, वेनेडियम, बोरोन आदि अतिरिक्त हैं. कुछ खनिज क्षारीय होते हैं और कुछ खनिज अम्लीय होते हैं. खनिज से शरीर में अम्ल तथा क्षार का संतुलन बना रहता है. खनिज हृदय को भी कार्यक्षम बनाने में बहुत अधिक सहायक होते हैं.

खनिज के कारण रक्त में प्रगाढ़ता आती है. खनिज के कारण रक्तचाप होने की संभावना कम होती है. खनिज मानव के लिये आवश्यक सभी खनिजों की पूर्ति सिर्फ गाय माता के मूत्र से करना संभव है.

सामान्य अमिनो अम्ल को ताकतवर न्यूरो मेसेंजर में बदलने के लिए खनिज की आवश्यकता होती है.

गोमूत्र में प्रोटीन 0.1037 ग्राम प्रति लीटर, यूरिक अम्ल 135 मिलीग्राम प्रति लीटर, यूरिया 5.5418 मिलीमोल प्रतिलीटर, क्रियाटिनिन 0.6670 ग्राम प्रति लीटर, लेक्टेट 3.7830 मिलीमोल प्रति लीटर, विटामिन सी 216.408 मिलीग्राम प्रति लीटर, विटामिन बी-1 444125 माइक्रोग्राम प्रति लीटर, विटामिन बी-2 0.6336 मिलीग्राम प्रतिलीटर, कैल्शियम 5.735 मिलीमोल प्रति लीटर, फास्फोरस 0.4805 मिलीमोल प्रति लीटर, पाचक रसों में लेक्टेट डिहाइड्रोजेनेज 21.780 यूनिट प्रति लीटर, अल्कलाइन फास्फेटेज 110.110 के.ए. यूनिट, अम्लीय

फास्फेटेज 456.620 के.ए. यूनिट, फिनोल 4.75 मिलीग्राम प्रति 100 मिलीलीटर है.

कैरोटिन

गायों को प्रतिदिन ताजा एवं कोमल हरा चारा भरपेट खिलाने पर कैरोटिन मूत्र में मिल जाता है.

श्यामा गाय में सूर्य के प्रकाश के साथ अन्य तरंगों को सोखने का अदभुत गुण मौजूद है जिसके कारण श्यामा गाय का मूत्र विशेष गुणकारी है.

कपिला गाय में विशेष उर्जा मौजूद है. कपिला गाय का मूत्र ज्यादा गुणकारी माना गया है. गाय माता के मूत्र में मौजूद कैरोटिन यानी स्वर्णक्षार बहुत ही चमत्कारिक कार्य करता है.

गाय माता के मूत्र में मौजूद कैरोटिन की मात्रा गाय माता के अधिक से अधिक सूर्योदय से सूर्यास्त तक सूर्य के प्रकाश में रहने और खानपान पर पूरी तरह से निर्भर करती है.

कैरोटिन शरीर में प्रवेश कर विटामिन ए में परिवर्तित हो जाता है. कैरोटिन के कारण ही रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत अधिक बढ़ जाती है.

अधिक जानकारी के लिए श्रीमती कमला आशर, अखिल विश्व कामधेनु परिवार, 21 सी, जयराज कोम्प्लेक्स, सोनी नी चाल, ओढव मार्ग, अहमदाबाद 382415 मोबाइल 9662407242 में संपर्क करें.